09-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - वृक्षपति बाप ने तुम बच्चों पर बृहस्पति की दशा बिठाई है, अभी तुम अविनाशी सुख की दुनिया में जा रहे हो"

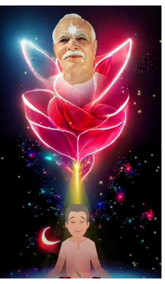

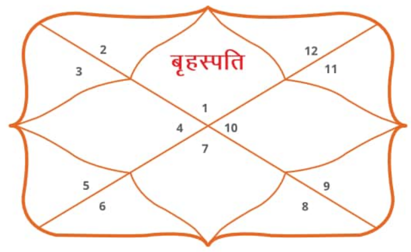

प्रश्नः- अविनाशी बृहस्पति की दशा किन बच्चों पर बैठती, उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- जो बच्चे जीते जी देह के सब सम्बन्धों को त्याग अपने को आत्मा निश्चय करते, ऐसे निश्चय आत्मिक बुद्धि वाले बच्चों पर बृहस्पति की दशा बैठती है। उनके ही सुख का गायन है कि अतीन्द्रिय सुख गोप गोपियों से पूछो। उनकी खुशी कभी भी गुम नहीं हो सकती।

गीत:-ओम् नमो शिवाए... Click

ॐ नमः शिवाय
पितु मात सहायक स्वामी सखा
तुम ही सब के रखवारे हो
जिसका कोई आधार नहीं
उसके तुम एक सहारे हो
पितु मात सहायक स्वामी सखा
तुम ही सब के रखवारे हो

तेरी लीला अपरंपार प्रभु
तेरी महिमा सबसे न्यारी है
जब जब धरती पर पाप बढ़ा
तूने ही विपदा टारी है
इस जीवन के अंधियारे में
बस एक तुम्ही उजियारे हो

इक नाम तेरा ही सच्चा है,
बाकी सब झूठी माया है।
जो अपना सब कुछ छोड़ चला,
उसने ही तुमको पाया है।
जिस मन में तुम्हारी भक्ति जगी,
उसके तुम्ही तो सहारे हो।
पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही सब के रखवारे हो।
जिसका कोई आधार नहीं,
उसके तुम एक सहारे हो।

पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही सब के रखवारे हो।

दोनों हाथों में लड्डू चाहने वाले (भौतिक दुनिया की भी लालसा हो और भगवान को भी पाना हो) वो कभी भी बाबा को पा नहीं सकता।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ओम् शान्ति। बच्चों ने बाप की महिमा सुनी। आज के दिन को कहा ही जाता है वृक्षपति डे, जिसको मिलाकर कहा है बृहस्पति। इनको ही गुरूवार भी कहा जाता है। न सिर्फ गुरूवार परन्तु सतगुरूवार। बंगाल में बहुत मानते हैं। गाया जाता है मनुष्य सृष्टि का बीजरूप इसलिए वृक्षपति कहते हैं। बीज ठहरा, तो पति भी ठहरा। वृक्ष के बीज को बाप भी कहेंगे। उनसे वृक्ष उत्पन्न होता है। यह है मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़। इनका बीज ऊपर में है। तुम जानते हो हम बच्चों पर अब अविनाशी वृक्षपति की दशा है क्योंकि अविनाशी स्वराज्य मिल रहा है। सतयुग को कहा ही जाता है अविनाशी सुखधाम। कलियुग को कहा जाता है विनाशी दु:खधाम। अभी दु:खधाम का विनाश होना है। सुखधाम अविनाशी है, आधाकल्प चलता है जो अविनाशी वृक्षपति स्थापन कर रहे हैं। बच्चों को सर्विस के लिए प्वाइंट्स नोट करनी है। प्रदर्शनी में यह-यह प्वाइंट्स मुख्य समझाने की हैं क्योंकि मनुष्य तो कुछ भी जानते नहीं। बरोबर यह है ज्ञान। अब बाप यह ज्ञान देते ही हैं - नई और

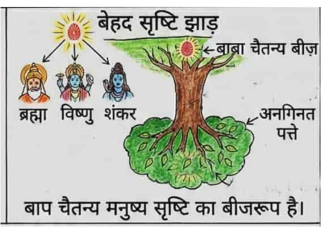

ॐ

अथ पञ्चदशोऽध्याय:

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमध:शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्॥

श्रीभगवान् बोले—आदिपुरुष परमेश्वररूप मूलवाले[1] और ब्रह्मारूप मुख्य शाखावाले[2] जिस संसाररूप पीपलके वृक्षको अविनाशी[3] कहते हैं, तथा वेद

१. आदिपुरुष नारायण वासुदेवभगवान् ही नित्य और अनन्त तथा सबके आधार होनेके कारण और सबसे ऊपर नित्यधाममें सगुणरूपसे वास करनेके कारण ऊर्ध्व नामसे कहे गये हैं और वे मायापति, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ही इस संसाररूप वृक्षके कारण हैं, इसलिये इस संसार-वृक्षको 'ऊर्ध्वमूलवाला' कहते हैं।

२. उस आदिपुरुष परमेश्वरसे उत्पत्तिवाला होनेके कारण तथा नित्यधामसे नीचे ब्रह्मलोकमें वास करनेके कारण, हिरण्यगर्भरूप ब्रह्माको परमेश्वरकी अपेक्षा 'अध:' कहा है और वही इस संसारका विस्तार करनेवाला होनेसे इसकी मुख्य शाखा है, इसलिये इस संसारवृक्षको 'अध:शाखावाला' कहते हैं।

३. इस वृक्षका मूल कारण परमात्मा अविनाशी है तथा अनादिकालसे इसकी परम्परा चली आती है, इसलिये इस संसारवृक्षको 'अविनाशी' कहते हैं।

* अध्याय १५ * १९१

जिसके पत्ते[1] कहे गये हैं—उस संसाररूप वृक्षको जो पुरुष मूलसहित तत्त्वसे जानता है, वह वेदके तात्पर्यको जाननेवाला है[2]॥ १॥

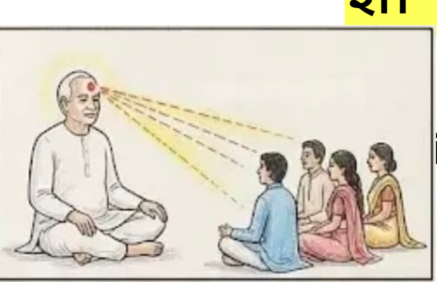

ints: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

09-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Point to be Noted

पुरानी दुनिया के बीच में, फिर यह प्राय:लोप हो जाता है। देवताओं को यह ज्ञान नहीं होता है। अगर यह चक्र का ज्ञान हो तो फिर राजाई में मजा ही न आये। अभी भी तुमको ख्याल होता है ना। क्या राज्य लेकर फिर हमारी यह हालत होगी। परन्तु यह तो ड्रामा बना हुआ है। चक्र को फिरना ही है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट हो रही है। कैसे रिपीट हो रही है - यह तुम बच्चे जानते हो। यह है मनुष्य सृष्टि। तुम्हारी बुद्धि में मूलवतन का झाड़ भी है। सेक्शन सबका अलग-अलग है। यह बातें कोई की बुद्धि में कभी नहीं होगी। कोई शास्त्रों में तो यह लिखी हुई नहीं हैं। हम आत्मा असुल शान्तिधाम की रहवासी हैं, अविनाशी हैं। कब विनाश को नहीं पाते। वह समझते हैं बुदबुदा पानी से निकल फिर उसमें मिल जाता है। तुम्हारी बुद्धि में सारा राज़ है। आत्मा अविनाशी है, जिसमें सारा पार्ट नूँधा हुआ है। यह चक्र का नॉलेज कोई शास्त्रों में नहीं है। भल कहाँ-कहाँ स्वास्तिका भी दिखाते हैं। चक्र की सिर्फ ऐसे-ऐसे लकीर लगा देते हैं, जिससे सिद्ध होता है अनेक धर्म थे। बाप ने

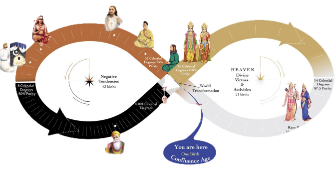

चढ़ाओ नशा...

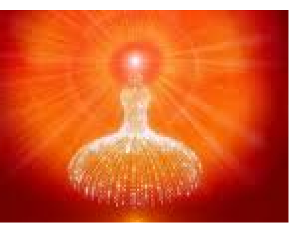

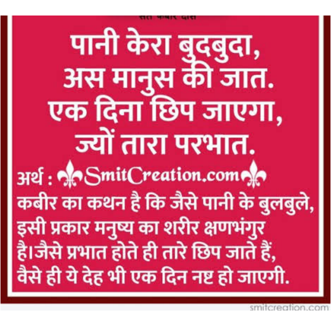

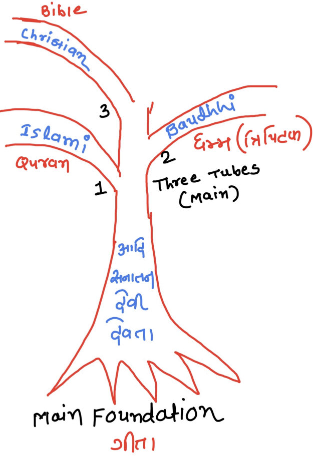

समझाया है मुख्य धर्म और शास्त्र हैं 4, सतयुग त्रेता में तो कोई धर्म स्थापन होता नहीं, न वहाँ कोई धर्मशास्त्र होता है। यह सब द्वापर से शुरू होते हैं। फिर देखो कितनी वृद्धि होती है। अच्छा - गीता कब सुनाई गई? बाप कहते हैं - मैं कल्प के संगमयुगे ही आता हूँ। उन्होंने फिर कल्प अक्षर निकाल सिर्फ संगमयुगे-युगे लिख दिया है। वास्तव में संगमयुगे और कोई धर्म स्थापन नहीं करते हैं। ऐसे नहीं कि त्रेता के अन्त, द्वापर के आदि के संगम पर इस्लामी धर्म स्थापन हुआ। नहीं, कहेंगे द्वापर में स्थापन हुआ। यह संगम का सुहावना समय है, जिसको कुम्भ कहते हैं। कुम्भ संगम को कहा जाता है। यह है आत्मायें और परमात्मा के मिलन का संगम। यह रूहानी मेला संगम पर ही होता है। उन्होंने पानी की गंगा का नाम बाला कर दिया है। ज्ञान सागर, पतित-पावन को जानते ही नहीं। उसने कैसे पतित दुनिया को पावन बनाया, कोई शास्त्रों में है नहीं। अब तुम बच्चों को बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो। देह के सब धर्म त्यागो। किसको कहते हैं? आत्माओं को। इसको

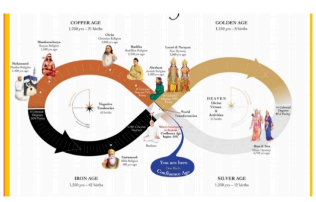

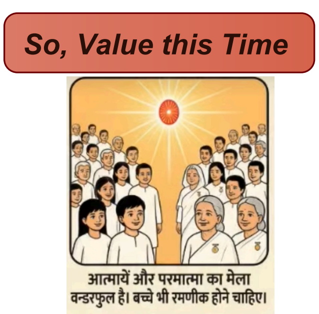

Point to ponder very deeply... to Realise "मरजीवा जन्म"

09-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

कहा जाता है जीते जी मरना। मनुष्य शरीर छोड़ते हैं तो देह के सब सम्बन्ध छूट जाते हैं।

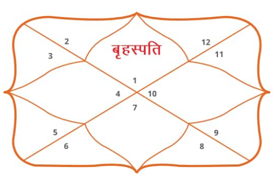

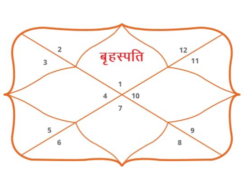

बाप कहते हैं - जो भी देह के सम्बन्ध हैं वह सब छोड़ अपने को आत्मा निश्चय करो। निश्चय आत्मिक बुद्धि बनो। जितना जास्ती याद करेंगे तो बृहस्पति की दशा होगी। जांच करो हम शिवबाबा को कितना याद करते हैं! याद से ही कट निकलती जायेगी और तुमको खुशी होगी। तुम महसूस कर सकते हो, हम आत्मा कितना बाप को याद करते हैं। अगर कम याद करेंगे तो कट भी कम निकलेगी। खुशी भी कम रहेगी। पद भी कम पायेंगे। आत्मा ही सतो रजो तमो बनती है। इस समय का ही गायन है - गोप गोपियों के अतीन्द्रिय सुख का। और कुछ भी याद नहीं पड़ता है सिवाए बाप के, तब ही खुशी का पारा चढ़ेगा। हमारे ऊपर बृहस्पति की दशा अथवा सतगुरू की दशा है। फिर कभी खुशी गुम हो जाती है तो कहते हैं

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Simple Math..

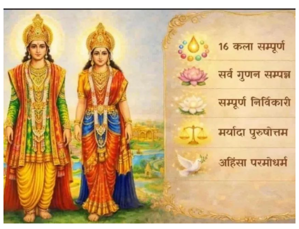

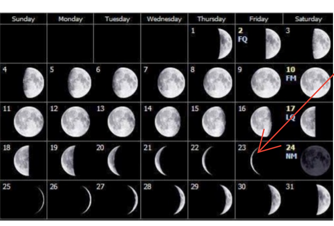

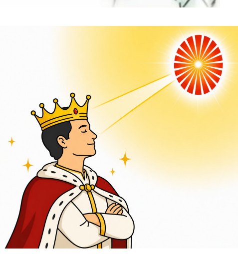

बृहस्पति की दशा बदल राहू की बैठी है। कोई बहुत साहूकार होते हैं, कोई सट्टा लगाया यह देवाला निकला। भारत में ही जब ग्रहण लगता है तो कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। तुम्हारा देवी-देवता धर्म भी 16 कला सम्पूर्ण था, उनको ग्रहण लगा हुआ है। राहू की दशा बैठती है इसलिए देवताओं के आगे जाकर गाते हैं - आप सर्वगुण सम्पन्न... हम पापी, कपटी हैं। अभी तुम समझते हो राहू का ग्रहण लगने से सब काले बन गये हैं। चन्द्रमा की पिछाड़ी में लकीर जाकर रहती है। बाप भी समझाते हैं तुम देवी-देवताओं के भी चित्र हैं। गीता ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म का शास्त्र है। परन्तु यह अपने धर्म को नहीं जानते हैं। रिलीजस हेड्स की कान्फ्रेन्स करते हैं। तुम वहाँ भी समझा सकते हो - ईश्वर सर्वव्यापी तो है नहीं। वह तो बेहद का बाप है। बच्चों को आकर वर्सा देते हैं। साधू सन्त आदि को तो वर्सा मिलता नहीं तो मानेंगे कैसे! चढ़ाओ नशा... तुम बच्चों को ही वर्सा मिलता है। मुख्य बात है ही यह सिद्ध करने की कि ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है। शिव जयन्ती होती है। शिव

Point to be Noted

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

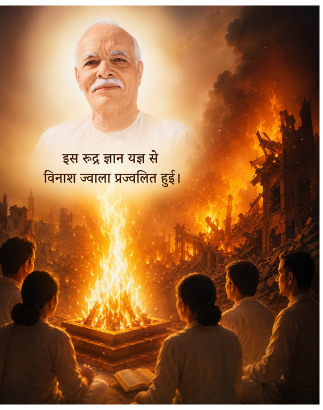

जयन्ती कहो अथवा रूद्र जयन्ती कहो - रूद्र यह ज्ञान यज्ञ रचते हैं। है तो शिव। वही गीता ज्ञान यज्ञ है, जिससे विनाश ज्वाला प्रज्जवलित हुई है।

How lucky and Great we are...!

प्रैक्टिकल में तुम देखते हो, कैसे निराकार बाबा ने रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा है। साकार तो कुछ कर न सके। यह बेहद का यज्ञ है, इनमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होनी है। बाकी तो वह सब हैं जिस्मानी यज्ञ। कितना रात-दिन का फ़र्क है। बाप कहते हैं - यह रूद्र ज्ञान यज्ञ है, विनाश भी होना है। तुम जब पास हो जायेंगे, पूरा योगी और ज्ञानी बन जायेंगे तो फिर तुम्हारे लिए नई दुनिया स्वर्ग चाहिए। नर्क का जरूर विनाश चाहिए। राजस्व अश्वमेध अक्षर भी ठीक है। घोड़े को स्वाहा करते हैं। वास्तव में है तुम्हारा यह रथ। एक दक्ष प्रजापति का भी यज्ञ रचते हैं, उनकी भी कहानी है।

अब तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए - हमको वृक्षपति बाप पढ़ा रहे हैं। हमारे ऊपर अब

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

बृहस्पति की दशा है, हमारी अवस्था बहुत अच्छी है। फिर चलते-चलते लिखते हैं बाबा हम तो मूँझ गये हैं। पहले हम बहुत खुशी में थे, अब पता नहीं क्या हुआ है। यहाँ आकर बाप का बनना बड़ी यात्रा है। वहाँ तीर्थ यात्राओं पर जाते हैं तो कितने पैसे खर्च करते हैं। अब यहाँ तो दान करने की बात नहीं। इनमें कुछ भी पैसा खर्च नहीं करना है। वह है जिस्मानी यात्रायें, तुम्हारी है रूहानी यात्रा। जिस्मानी यात्रा से फायदा कुछ भी नहीं। गीत में भी है ना - चारों ओर लगाये फेरे फिर भी जन्म-जन्मान्तर दूर रहे। अभी तुम समझते हो कितनी ढेर यात्रायें की होगी। कहाँ न कहाँ मनुष्य जाते जरूर हैं। हरिद्वार में गंगाजी पर जरूर जाते हैं। पतित-पावनी गंगा समझते हैं ना। अब वास्तव में तुम हो सच्ची-सच्ची ज्ञान गंगायें। तुम्हारे पास भी बहुत आकर ज्ञान स्नान करते हैं। बाबा ने समझाया है - सतगुरू एक ही है। सर्व का सद्गति दाता सिवाए एक सतगुरू के और कोई गुरू नहीं। बाप कहते हैं - मैं तुमको कल्प-कल्प संगमयुग पर आकर सद्गति दे पुजारी से पूज्य बनाता हूँ। फिर

Swamaan

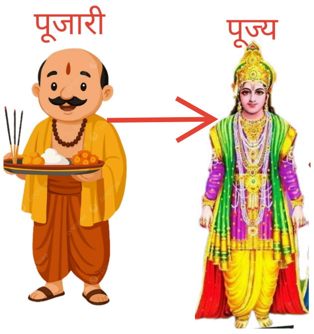

09-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तुम पुजारी बन दु:खी बन जाते हो। यह भी अभी पता पड़ा है। बरोबर हमारा आधाकल्प राज्य चलता है फिर द्वापर में हम सो देवी-देवता वाम मार्ग में चले जायेंगे। जब रावण राज्य शुरू होता है तब से ही वाम मार्ग शुरू होता है। उनकी भी निशानियां हैं। जगन्नाथ के मन्दिर में जाओ तो अन्दर काली मूर्ति है। बाहर में देवताओं के गन्दे चित्र हैं। उस समय अपने को भी थोड़े ही समझ में आता था कि क्या है। विकारी मनुष्य विकारी दृष्टि से देखेंगे। तो समझते थे, देवतायें भी विकारी थे। यह लिखा हुआ है देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं। ड्रेस भी देवताओं की दी है। यहाँ भी देलवाड़ा मन्दिर में जाओ तो ऊपर में स्वर्ग लगा हुआ है। नीचे तपस्या में बैठे हैं। इन सब राज़ों को और कोई जानते नहीं हैं। बाबा का तो अनुभवी रथ है ना।

Also Khajuraho Temples, M.P.

Point to be Noted

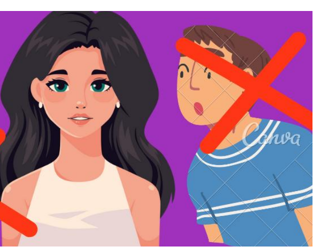

चढ़ाओ नशा...
But we know, How Lucky & Great we are..!

Sweet BapDada

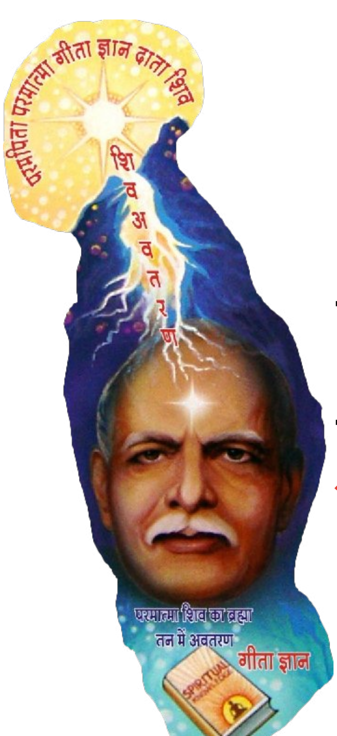

तुम बच्चे अब समझ रहे हो - आत्मायें और परमात्मा अलग रहे बहुकाल... तुम जो पहले

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Refer last page for connected murlis

09-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

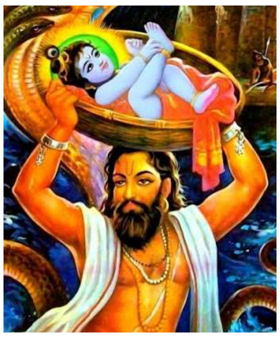

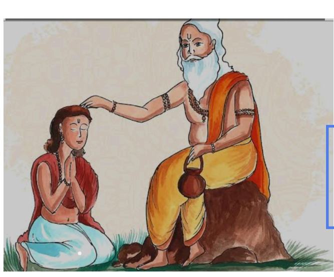

अलग हुए हो फिर तुम ही आकर पहले मिलते हो। सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स है श्रीकृष्ण। श्रीकृष्ण का बाप भी तो होगा ना। श्रीकृष्ण के माँ बाप का इतना कुछ दिखाते नहीं हैं। सिर्फ दिखाते हैं माथे पर रखकर नदी से उस पार ले गया। राजाई आदि कुछ नहीं दिखाई है। उनके बाप की महिमा क्यों नहीं है! अभी तुम जानते हो इस समय श्रीकृष्ण की आत्मा ने अच्छी रीति पढ़ाई पढ़ी है। जिस कारण माँ बाप से भी ऊंच पद पाया है। तुम समझते हो हम श्रीकृष्ण की राजधानी में थे, स्वर्ग में तो थे ना। फिर हम चन्द्रवंशी बने। अब फिर सूर्यवंशी बनने के लिए श्रीमत पर चल पावन बन पावन दुनिया के मालिक बनेंगे। हर एक अपनी अवस्था को देख सकते हो। पुछो अपने आप से... अगर हम इस समय शरीर छोड़ दें तो किस गति को पायेंगे। हर एक समझ सकते हैं। जितना बाप को याद करेंगे उतने विकर्म विनाश होंगे। मनुष्य के ऊपर कोई आफतें वा दु:ख आता है वा देवाला निकालते हैं तो साधुओं का जाकर संग करते हैं। फिर मनुष्य समझते यह तो भगत आदमी है। ठगी थोड़ेही

☆☆☆ We can see this

करेंगे। ऐसे-ऐसे भी दो चार वर्ष में बहुत धनवान हो जाते हैं। उन्हों के बहुत छिपे हुए पैसे होते हैं। हर एक अपनी बुद्धि से समझ सकते हैं। तुम्हारे में भी बहुत हैं जो बहुत कम याद करते हैं इसलिए बाबा कहते हैं अपना कल्याण चाहते हो तो अपने पास नोटबुक रखो। चार्ट नोट करो। हम सारे दिन में कितना समय याद में रहे। मनुष्य तो सारी जीवन की भी हिस्ट्री लिखते हैं। तुमको तो सिर्फ याद का चार्ट लिखना है, अपनी ही उन्नति है। ये पक्का समझ लो.. बाबा को याद नहीं करेंगे तो ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। विकर्म विनाश ही नहीं होंगे तो ऊंच पद कैसे पायेंगे। Simple Math.. फिर Result सजायें खानी पड़ेगी। मोचरा जो नहीं खायेंगे तो पद अच्छा मिलेगा। मोचरा खाकर फिर कुछ थोड़ा बहुत पद पाना वह क्या काम का। धर्मराज का मोचरा न खायें, बेइज्जती न हो - यह पुरुषार्थ करना है। तुम देखते हो शिवबाबा बैठा रहता है फिर धर्मराज भी है। तुमको सब साक्षात्कार कराते हैं। तुमने यह-यह किया था, याद है? अब खाओ सजा। फिर उसी समय सजायें उतनी ही खाते हैं, जितनी जन्म-जन्मान्तर खाते हैं। पिछाड़ी में थोड़ा

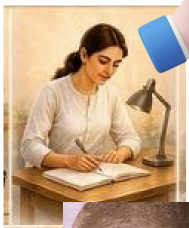

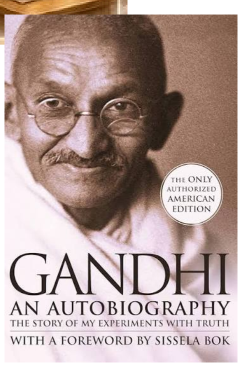

राम दुआरे तुम रखवारे
होत न आज्ञा बिनु पैसारे |

Refer last pages for Example

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

09-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

रोटी टुक्कड़ मिला, उससे क्या फायदा। मोचरा तो नहीं खाना चाहिए। अपनी अवस्था की जांच करनी है। जैसे पोतामेल निकालते हैं, कोई 6 मास का, कोई 12 मास का। कोई तो रोज़ का भी निकालते हैं। बाप कहते हैं - तुम भी व्यापारी हो। कोई विरला व्यापारी बेहद के बाप से व्यापार करे। धन नहीं तो तन-मन तो है ना। उनको सर्राफ भी कहते हैं। मट्टा सट्टा करते हैं ना। तुम तन-मन-धन देते हो रिटर्न में 21 जन्म के लिए कितना वर्सा पाते हो। बाबा हम आपका हूँ। ऐसी युक्ति बताओ जो हमारी आत्मा और शरीर इन लक्ष्मी-नारायण जैसा बन जाये। बाबा कहते मैं तुमको कितना गोरा बनाता हूँ। एकदम रूप ही बदल देता हूँ। दूसरे जन्म में तुमको फर्स्टक्लास शरीर मिलेगा। तुम वैकुण्ठ में भी देखते हो। तुम जानते हो यह मम्मा बाबा फिर लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। एम आबजेक्ट भी दिखाते हैं। अब जो जितना पुरुषार्थ करे। अगर पुरुषार्थ पूरा नहीं करेंगे, धमचक्र मचायेंगे तो अपना पद ही भ्रष्ट करेंगे। अच्छा!

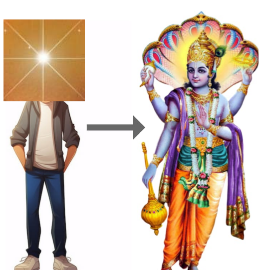

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

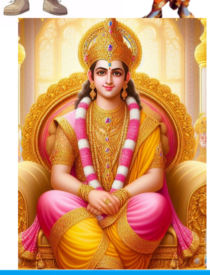

shiv baba says

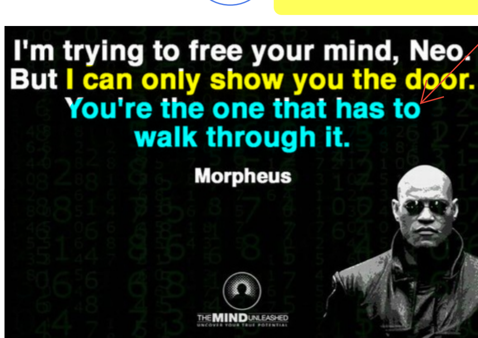

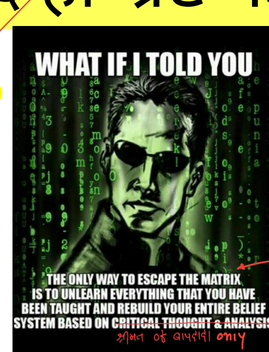

ये पक्का समझ लो..

ीवा

M.imp.

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अपनी अवस्था की जांच स्वयं ही करनी है। अपने कल्याण के लिए डेली डायरी रखनी है, जिसमें याद का चार्ट नोट करना है।

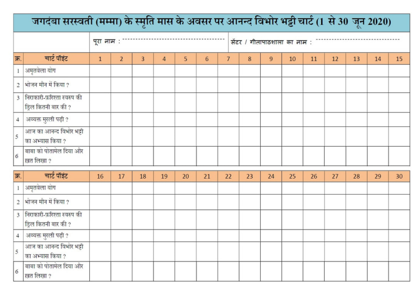

जगदंबा सरस्वती (मम्मा) के स्मृति मास के अवसर पर आनन्द विभोर भट्ठी चार्ट (1 से 30 जून 2020)																
		पूरा नाम : ----------							सेंटर / गीतापाठशाला का नाम : ----------							
क्र.	चार्ट पॉइंट	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
1	अमृतवेला योग															
2	भोजन मौन में किया ?															
3	निराकारी-फ़रिश्ता स्वरुप की ड्रिल कितनी बार की ?															
4	अव्यक्त मुरली पढ़ी ?															
5	आज का आनन्द विभोर भट्ठी का अभ्यास किया ?															
6	बाबा को पोतामेल दिया और ख़त लिखा ?															
क्र.	चार्ट पॉइंट	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
1	अमृतवेला योग															
2	भोजन मौन में किया ?															
3	निराकारी-फ़रिश्ता स्वरुप की ड्रिल कितनी बार की ?															
4	अव्यक्त मुरली पढ़ी ?															
5	आज का आनन्द विभोर भट्ठी का अभ्यास किया ?															
6	बाबा को पोतामेल दिया और ख़त लिखा ?															

2) बेहद के बाप से सच्चा-सच्चा व्यापार करना है। अपना तन-मन-धन बाप हवाले कर 21 जन्मों के लिए रिटर्न लेना है। निश्चयबुद्धि बन अपना कल्याण करना है।

09-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- खुशी के साथ शक्ति को धारण कर विघ्नों को पार करने वाले विघ्न जीत भव

जो बच्चे जमा करना जानते हैं वह शक्तिशाली बनते हैं। यदि अभी-अभी कमाया, अभी-अभी बांटा, स्वयं में समाया नहीं तो शक्ति नहीं रहती। सिर्फ बांटने वा दान करने की खुशी रहती है।

खुशी के साथ शक्ति हो तो सहज ही विघ्नों को पार कर विघ्न जीत बन जायेंगे। फिर कोई भी विघ्न लगन को डिस्टर्ब नहीं करेंगे।

इसलिए जैसे चेहरे से खुशी की झलक दिखाई देती है ऐसे शक्ति की झलक भी दिखाई दे।

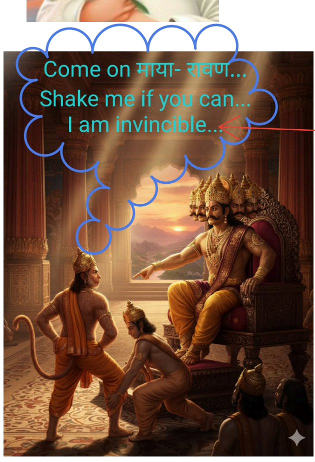

स्लोगन:- परिस्थितियों में घबराने के बजाए उन्हें शिक्षक समझकर पाठ सीख लो।

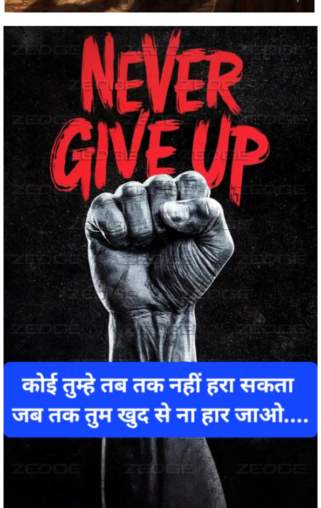

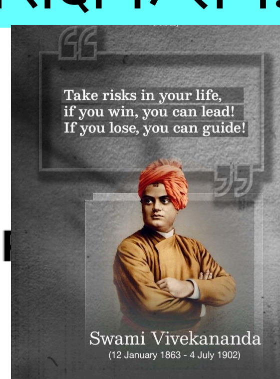

न योग धारणा से

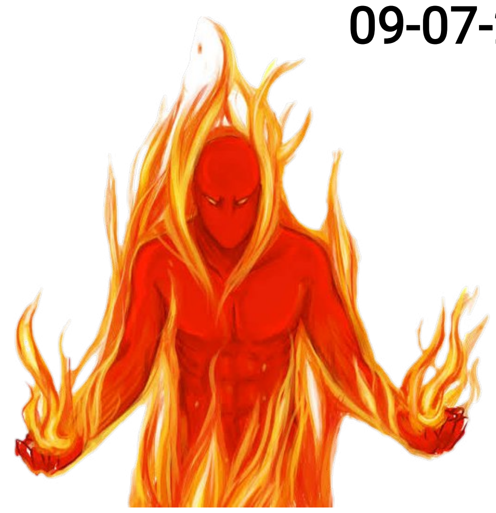

ये अव्यक्त इशारे -

ज्वालास्वरूप स्थिति में रह शक्तिशाली याद का अनुभव करो

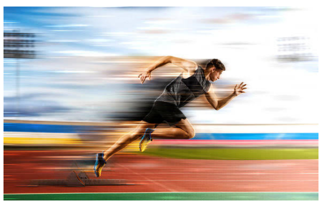

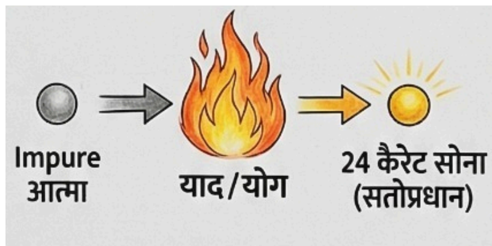

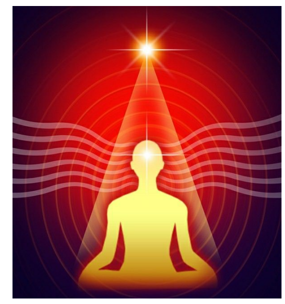

लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थ ज्वाला-रूप का ही रहा हुआ है। पाण्डवों के कारण यादव रूके हुए हैं। समझा?

पाण्डवों की श्रेष्ठ शान, रुहानी शान की स्थिति यादवों के परेशानी वाली परिस्थिति को समाप्त करेगी।

तो अपनी शान से परेशान आत्माओं को शान्ति और चैन का वरदान दो।

ज्वाला स्वरूप अर्थात् लाइट हाउस और माइट हाउस स्थिति को समझते हुए इसी पुरुषार्थ में रहो।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans जून 26 → Click

All अव्यक्त इशारे जून 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

11.1 सर्व सेवा स्थानों का सैर-समाचार :

आज अमृतवेले सर्व सेवा-स्थानों का सैर किया, उस सैर का समाचार सुनाते हैं। क्या देखा — हर एक रूहानी बच्चे रूह को राहत देने के लिए, मिलन मनाने के लिए, रूह-रूहान करने के लिए व अपने दिल की बातें दिलाराम बाप के आगे रखते हुए अपने को डबल लाइट का वरदान दे भी रहे थे और ले भी रहे थे। कोई-कोई बच्चे विश्व-कल्याणी स्वरूप में स्थित हो, बाप द्वारा मिले हुए सर्व शक्तियों का वरदान व महादान अनेक आत्माओं के प्रति दे रहे थे। तीन प्रकार की रिजल्ट देखी। एक थे लेने वाले, दूसरे थे मिलन मनाने वाले और तीसरे थे लेकर देने वाले अर्थात् कमाई करने वाले। ऐसे तीन प्रकार के बच्चों को चारों ओर देखा।

चारों ओर के आये हुए पत्र सन्देश ईमेल सब बापदादा के पास पहुंच गये हैं। सबने अपने प्यार की निशानी, खुद नहीं आ सके तो पत्र द्वारा ईमेल द्वारा भेज दी है। बापदादा ने एक-एक दिल के प्यार के पत्र सन्देश सौगात स्वीकार की और हर एक को बापदादा अपने नयनों में इमर्ज कर, प्यार का रेसपान्ड यादप्यार के रूप में दे रहे है। अच्छा है यह परमात्म प्यार बहुत पुरुषार्थ में सहयोग देता है। तो हर एक बच्चा प्यारा है, प्यारे रहेंगे और प्यार के झूले में झूलते हुए बापदादा के साथ अपने घर चलेंगे। वह भी टाइम आ जायेगा। जो सब साथ चलेंगे, साथ चलने वाले हो ना। पीछे पीछे नहीं आना, मजा नहीं आयेगा। मजा है हाथ में हाथ, साथ में साथ, हाथ है श्रीमत, श्रीमत बुद्धि में होगी, आत्मा परमात्मा का साथ होगा और घर चलेंगे। चलने वाले हो ना सभी, रह नहीं जाना। अभी भी साथ है, चाहे किसी भी कोने में हो, लेकिन बाप साथ है, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और फिर ब्रह्मा बाप के साथ राज्य करेंगे। पक्का वायदा है ना। बीच में नहीं रह जाना। कोई कस्टम की चीज़ होगी तो रुक जायेगी। रावण की चीज हुई ना कस्टम। कोई भी रावण का

Mind well

Attention Please..!

May I have your Attention Please..!

संस्कार, स्वभाव वह धर्मराज पुरी कस्टम में फंसा देगी। और बाप के साथ चले जायेंगे, और कोई अगर होगा तो कस्टम में रुकना पड़ेगा, अच्छा लगेगा। नहीं लगेगा ना? बाप को भी अच्छा नहीं लगेगा। जब वायदा है साथ का, तो सदा साथ रहना। हर समय बाप और आप, कितना मजा आयेगा। बाप और आप, मजा है ना।

That's All

(15.10.2007)

बिल्कुल अच्छा धारणा वाला होगा वह अच्छा रीत समझा सकेंगे। ब्रह्मा पर ही जास्ती बात समझाने की होती है। विष्णु को भी नहीं जानते। यह भी समझाना होता है। वैकुण्ठ को विष्णुपुरी कहा जाता है अर्थात् लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। श्रीकृष्ण प्रिन्स होगा तो कहेंगे ना - हमारा बाबा राजा है। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण का बाप राजा नहीं हो सकता। श्रीकृष्ण प्रिन्स कहलाया जाता है तो जरूर राजा के पास जन्म हुआ है। साहूकार पास जन्म ले तो प्रिन्स थोड़ेही कहलायेंगे। राजा के पद और साहूकार के पद में रात-दिन का फ़र्क हो जाता है। श्रीकृष्ण के बाप राजा का नाम ही नहीं है। श्रीकृष्ण का कितना नाम बाला है। बाप का ऊंच पद नहीं कहेंगे। वह सेकण्ड क्लास का पद है जो सिर्फ निमित्त बनते हैं श्रीकृष्ण को जन्म देने। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण की आत्मा से वह ऊंच पढ़ा हुआ है। नहीं। श्रीकृष्ण ही सो फिर नारायण बनते हैं। बाकी बाप का नाम ही गुम हो जाता है। है

Secret Revealed

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 6

भी तुमको अभी पढ़ाते हैं। तुम भविष्य में नर से नारायण बनते हो। तुम्हारा जन्म तो होगा ना। ऐसे तो नहीं स्वर्ग कोई समुद्र से निकल आयेगा। श्रीकृष्ण ने भी जन्म लिया ना। कंसपुरी आदि तो उस समय थी नहीं। श्रीकृष्ण का कितना नाम गाया जाता है। उनके बाप का गायन ही नहीं। उनका बाप कहाँ है? जरूर श्रीकृष्ण किसी का बच्चा होगा ना। श्रीकृष्ण जब जन्म लेते हैं तब थोड़े बहुत पतित भी रहते हैं। जब वह बिल्कुल खत्म हो जाते हैं तब वह गद्दी पर बैठते हैं। अपना राज्य ले लेते हैं, तब से ही उनका संवत शुरू होता है। लक्ष्मी-नारायण से ही संवत शुरू होता है। तुम पूरा हिसाब लिखते हो। इनका राज्य इतना समय,

06/02/2026

Attention! Top secret Revealed

point to be noted

13-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जरूर ब्राह्मण। परन्तु पढ़ाई में श्रीकृष्ण से कम है। श्रीकृष्ण की आत्मा की पढ़ाई अपने बाप से ऊंच थी, तब तो इतना नाम होता है। श्रीकृष्ण का बाप कौन था - यह जैसे किसको पता नहीं। आगे चल मालूम पड़ेगा। बनना तो यहाँ से ही है। राधे के भी माँ-बाप तो होंगे ना। परन्तु उनसे राधे का नाम जास्ती है क्योंकि माँ-बाप कम पढ़े हुए हैं। राधे का नाम उनसे ऊंच हो जाता है। यह हैं डीटेल की बातें - बच्चों को समझाने के लिए। सारा मदार पढ़ाई पर है। ब्रह्मा पर भी समझाने का अक्ल चाहिए। वही श्रीकृष्ण जो है उनकी आत्मा ही 84 जन्म भोगती है। तुम भी 84 जन्म लेते हो। सब इकट्ठे तो नहीं आयेंगे। जो पढ़ाई में पहले-पहले होते हैं वहाँ

Note it Down

यह सांवरा था ना। कहते हैं श्रीकृष्ण को सर्प ने डसा तो सांवरा हो गया। अब वह तो सतयुग का प्रिन्स था, कैसे काला हो गया। अभी तुम यह बातें समझते हो। श्रीकृष्ण के माँ-बाप भी अभी पढ़ रहे हैं। माँ-बाप से उत्तम श्रीकृष्ण गाया हुआ है। माँ-बाप का कोई नाम नहीं है। नहीं तो जिस माँ-बाप से ऐसा बच्चा पैदा हुआ वह माँ-बाप भी प्यारे होने चाहिए। परन्तु नहीं, महिमा सारी राधे-कृष्ण की है। माँ-बाप की कुछ है नहीं। तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान है।

11/05/26

keep noting all these secrets

24/02/26

किसको पता नहीं है। श्रीकृष्ण और राधे की आयु में 2-3 वर्ष का फ़र्क होगा। सतयुग में जरूर पहले श्रीकृष्ण ने जन्म लिया होगा फिर राधे ने। परन्तु सतयुग कब था, यह किसको पता नहीं है। तुमको भी समझने में बहुत वर्ष लगे हैं, तो दो दिन में कोई कहाँ तक समझेंगे। बाप तो बहुत सहज बताते हैं,

Point to be Noted

25-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

संस्कार ले जाती है। अभी तुम गुल-गुल (फूल) बन अच्छे घर में जन्म लेते रहेंगे। यहाँ जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं, तो जरूर अच्छे कुल में जन्म लेते होंगे। नम्बरवार तो हैं ना। जैसे-जैसे कर्म करते हैं ऐसा जन्म लेते हैं। जब बुरे कर्म करने वाले बिल्कुल खत्म हो जाते हैं फिर स्वर्ग स्थापन हो जाता है, छांटछूट होकर। तमोप्रधान जो भी हैं वह खत्म हो जाते हैं। फिर नये देवताओं का आना शुरू होता है। जब भ्रष्टाचारी सब खत्म हो जाते हैं तब श्रीकृष्ण का जन्म होता है, तब तक बदली सदली होती रहती है। जब कोई छी-छी नहीं रहेगा तब श्रीकृष्ण आयेगा, तब तक तुम आते जाते रहेंगे। श्रीकृष्ण को रिसीव करने वाले माँ बाप भी पहले से चाहिए ना। फिर सब अच्छे-अच्छे रहेंगे। बाकी चले जायेंगे, तब ही उसको स्वर्ग कहा जायेगा। तुम श्रीकृष्ण को रिसीव करने वाले रहेंगे। भल तुम्हारा छी-छी जन्म होगा क्योंकि रावण राज्य है ना। शुद्ध जन्म तो हो न सके। गुल-गुल (पवित्र) जन्म श्रीकृष्ण का ही पहले-पहले होता है। उसके बाद नई दुनिया वैकुण्ठ कहा जाता है।

ये पक्का समझ लो..

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 8

25-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

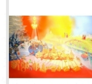

श्रीकृष्ण बिल्कुल गुल-गुल नई दुनिया में आयेंगे। रावण सम्प्रदाय बिल्कुल खत्म हो जायेगी। श्रीकृष्ण का नाम उनके माँ-बाप से भी बहुत बाला है। श्रीकृष्ण के माँ-बाप का नाम इतना बाला नहीं है। श्रीकृष्ण से पहले जिनका जन्म होता है वो योगबल से जन्म नहीं कहेंगे। ऐसे नहीं श्रीकृष्ण के माँ-बाप ने योगबल से जन्म लिया है। नहीं, अगर ऐसा होता तो उन्हों का भी नाम बाला होता। तो सिद्ध होता है उनके माँ-बाप ने इतना पुरुषार्थ नहीं किया है जितना श्रीकृष्ण ने किया है। यह सब बातें आगे चल तुम समझते जायेंगे। पूरी कर्मातीत अवस्था वाले राधे-कृष्ण ही हैं। वही सद्गति में आते हैं। पाप आत्मायें सब खत्म हो जाती हैं तब उन्हों का जन्म होता है फिर कहेंगे पावन दुनिया इसलिए श्रीकृष्ण का नाम बाला है। माँ-बाप का इतना नहीं। आगे चल तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। टाइम तो पड़ा है। तुम किसको भी समझा सकते हो - हम यह बनने के लिए पढ़ रहे हैं। विश्व में इनका राज्य अब स्थापन हो रहा है। हमारे लिए तो नई दुनिया चाहिए। अभी तुमको दैवी सम्प्रदाय

Mind very well...

costume of Mother - Father of Krishna are made by काम विकार

Coming soon...

Coming soon...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 9

नारायण की कथा सुनने, जिससे नर से नारायण बनेंगे। नारायण बनेंगे तो जरूर लक्ष्मी भी होगी। लक्ष्मी-नारायण होंगे तो जरूर उन्हों की राजधानी भी होगी ना। अकेले लक्ष्मी-नारायण तो नहीं बनेंगे। लक्ष्मी बनने की अलग कथा थोड़ेही है। नारायण के साथ लक्ष्मी भी बनती है। लक्ष्मी भी कभी नारायण बनती है। नारायण फिर कभी

Secret Revealed

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 6

19-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

लक्ष्मी बनते हैं। कोई-कोई गीत बहुत अच्छे हैं। माया के घुटके आने पर गीत सुनने से हर्षितपना आ जायेगा। जैसे तैरना सीखना होता है तो पहले

This is Just churning (विचार सागर मंथन)....
Kindly grab it as per your divine Intellect

मीठे बाबा की श्रीमत है की "बच्चे विचार सागर मंथन करो"

Click

प्रश्नः- ज्ञान सुनते हुए भी बच्चों में उसकी धारणा क्यों नहीं होती है?

उत्तर:- क्योंकि विचार सागर मंथन करना नहीं आता है। बुद्धियोग देह और देह के सम्बंधों में लटका हुआ है। पहले जब बुद्धि से मोह निकले, तब कुछ धारणा भी हो। मोह ऐसी चीज़ है, जो एकदम बन्दर बना देता है इसलिए बाप बच्चों को पहला-पहला वायदा याद दिलाते हैं - देह सहित, देह के सब सम्बन्धों को भूलो और मुझे याद करो।

कालों का काल है बाप। उनकी आज्ञा नहीं मानेंगे तो धर्मराज से डन्डा खायेंगे।
---- साकार मुरली:- 30/1/25

हनुमान का छोटा सा भी मंदिर होगा तो उनके पास लाल डंडा या गदा *जरूर होगी।*
यह यादगार है बापदादा के right hand *धर्मराज* का..

इसीलिए हनुमान चालीसा में कहा है कि
राम दुआरे तुम रखवारे(राम द्वार = सूक्ष्म वतन धर्मराजपुरी बन जाएगी)
होत न आज्ञा बिनु पैसारे... (हनुमान/ धर्मराज के द्वारा सजाओ के बल से जब तक आत्मा पावन नही बनती तब तक उनको परमधाम में प्रवेश होने की permission नहीं है except अष्ट रत्न)

(उसका यादगार: majority गांव में आज भी हनुमान मंदिर देखेंगे तो वो गांव के बाहर/गांव के दरवाजे पर/entrance के आसपास होगा... इसका मतलब है कि हनुमान/धर्मराज परमधाम के बाहर यानी सूक्ष्मवतन पे खड़ा है।)

"बाप को धर्मराज का साथ लेना पसन्द नहीं है। कर क्या नहीं सकता है! एक सेकेण्ड में किसी को भी अन्दर ही अन्दर सज़ा दे सकते हैं और वो सेकेण्ड की सज़ा बहुत-बहुत तेज़ होती है। लेकिन बापदादा नहीं चाहते।

बाप का रूप प्यारा है, धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।"

AV: 25/11/95

Attention Please...!

जो बाबा, साकार मुरली में कहते है की पिछाड़ी में कायदे बहुत कड़े हो जाएंगे। वो इसी संदर्भ में बाबा कहते होंगे।

Example :→ दिन-प्रतिदिन बहुत कड़े कायदे होते जायेंगे।
SM: 31/12/2025

Sakar Murli date :- 8/6/2023

से पूछो कि क्राइस्ट याद आता है या गॉड फादर? जानते हो कि पाप करेंगे तो दण्ड भोगना पड़ेगा। परन्तु बाप दण्ड कभी नहीं देता। (Note down!) वह करनकरावनहार है। धर्मराज द्वारा सजा दिलाते हैं। गॉड तो मोस्ट बील्वेड बाप है। वह झूठे कलंक लगाते हैं कि बाप ही सुख-दु:ख देते हैं। तो क्या बेरहम हैं? गाते भी हैं मर्सीफुल। बाप कहते हैं मैं कैसे बेरहमी करूँगा। माया ने तुम्हारे पर बेरहमी की है। मैं तो उनसे छुड़ाता हूँ। माया

Avyakt Murli : 15/11/2003

ब्रह्मा बाप को फॉलो करो। अपवित्रता का नाम निशान नहीं, ब्राह्मण जीवन माना यह है। माताओं में भी मोह है तो अपवित्रता है। मातायें भी ब्राह्मण हैं ना। तो ना माताओं में, ना कुमारियों में, ना कुमारों में, न अधर कुमार कुमारियों में। ब्राह्मण माना ही है पवित्र आत्मा। अपवित्रता का अगर कोई कार्य होता भी है तो यह बड़ा पाप है। इस पाप की सजा बहुत कड़ी है। ऐसे नहीं समझना यह तो चलता ही है। थोड़ा बहुत तो चलेगा ही, नहीं। यह फर्स्ट सबजेक्ट है। नवीनता ही पवित्रता की है। ब्रह्मा बाप ने अगर गालियां खाई तो पवित्रता के कारण। हो गया, ऐसे छूटेंगे नहीं। अलबेले नहीं बनो इसमें। कोई भी ब्राह्मण चाहे सरेण्डर है, चाहे सेवाधारी है, चाहे प्रवृत्ति वाला है, इस बात में धर्मराज भी नहीं छोड़ेगा, ब्रह्मा बाप भी धर्मराज को साथ देगा। इसलिए कुमार कुमारियां कहाँ भी हो, मधुबन में हो, सेन्टर पर हो लेकिन इसकी चोट, संकल्प मात्र की चोट बहुत बड़ी चोट है। गीत गाते हो ना - पवित्र मन रखो, पवित्र तन रखो.. गीत है ना आपका। तो मन पवित्र है तो जीवन पवित्र है इसमें हल्के नहीं होना, थोड़ा कर लिया क्या है! थोड़ा नहीं है, बहुत है। बापदादा आफीशियल इशारा दे रहा है, इसमें नहीं बच सकेंगे। इसका हिसाब-किताब अच्छी तरह से लेंगे, कोई भी हो। इसलिए सावधान, अटेन्शन। सुना - सभी ने ध्यान से। दोनों कान खोल के सुनना। वृत्ति में भी टचिंग नहीं हो। दृष्टि में भी टचिंग नहीं। संकल्प में नहीं तो वृत्ति दृष्टि क्या है! क्योंकि समय सम्पन्नता का समीप आ रहा है, बिल्कुल प्युअर बनने का। उसमें यह चीज़ तो पूरा ही सफेद कागज पर काला दाग है।

Dadi Jankiji says : → Click

शिवबाबा | हनुमान = **धर्मराज** = शंकर | **ब्रह्माबाबा**

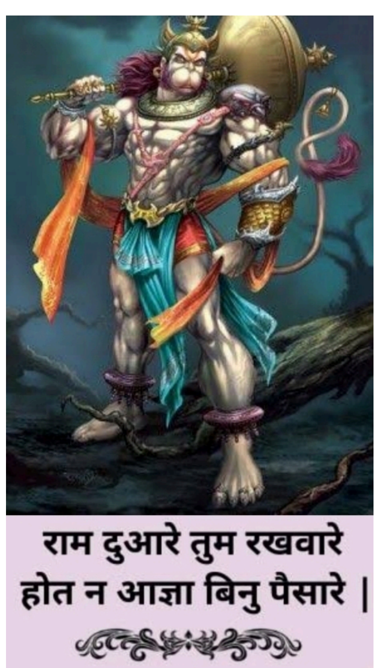

It is not from Authentic source But Placed here for Building connection.

• शंकर क्या करते हैं? उनका (विषपायी) पार्ट ऐसा वण्डरफुल है जो तुम विश्वास कर न सको। ***
(मु.14.5.70 पृ.2 आदि)

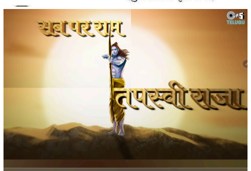

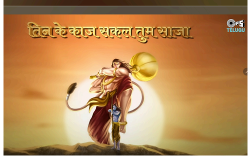

बाप का रूप प्यारा है,
धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।
AV: 25/11/95

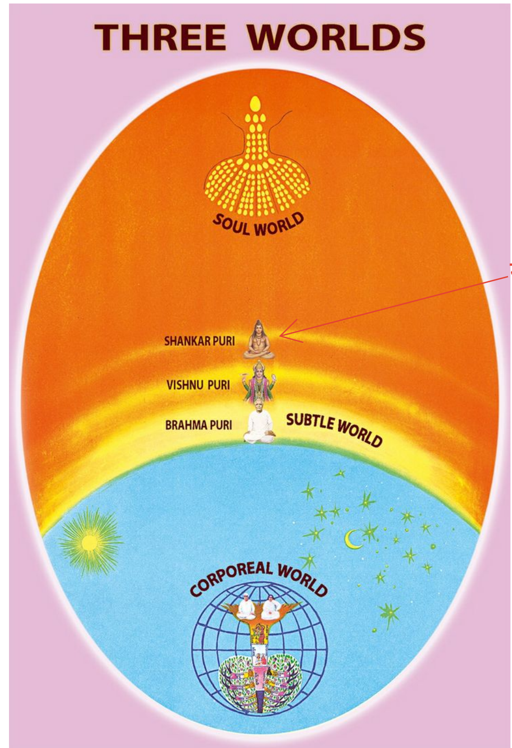

राम दुआरे तुम रखवारे

बाप का जो गायन है कि वह सर्जन भी है, इंजीनियर भी है, वकील भी है, जज भी है - इसका प्रैक्टिकल सब अनुभव करेंगे, तब सब तरफ से बुद्धि हटकर एक तरफ जायेगी।
AV: 2/11/87

महावीर का दिखाते हैं न कि वह सारी पहाड़ी की पहाड़ी को ले आया।
AV: 28/12/79

Mind very well... *** शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है लेकिन शक्तियाँ ही संहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है। शक्तियों को संहारी रूप धारण करना है, जिससे संहार करना है। AV: 9/10/71

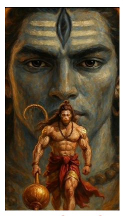

शंकर स्वयं केसरी नंदन

Reference → **Click**

Secret Revealed

(36) m.Imp. *****

बच्चों ने पूछा कि एक ही समय इकट्ठा मृत्यु कैसे और क्यों होता? इसका कारण है। यह तो जानते हो और अनुभव करते हो कि अब सम्पन्न होने का समय समीप आ रहा है। सभी आत्माओं का, द्वापरयुग वा कलियुग से किए हुए विकर्मों वा पापों का खाता जो भी रहा हुआ है वह अभी पूरा ही समाप्त होना है। क्योंकि सभी को अब वापस घर जाना है। द्वापर से किये हुए कर्म वा विकर्म दोनों का फल अगर एक जन्म में समाप्त नहीं होता तो दूसरे जन्मों में भी चूक्तू का वा प्राप्ति का हिसाब चलता आता है। लेकिन अभी लास्ट समय है और पापों का हिसाब ज्यादा है। इसलिए अब जल्दी-जल्दी जन्म और मृत्यु - इस सजा द्वारा अनेक आत्माओं का पुराना खाता खत्म हो रहा है। तो वर्तमान समय मृत्यु भी दर्दनाक और जन्म भी मैजारिटी का बहुत दुःख से हो रहा है। न सहज मृत्यु, न सहज जन्म है। तो दर्दनाक मृत्यु और दुःखमय जन्म यह जल्दी हिसाब किताब चूक्तू करने का साधन है। जैसे इस पुरानी दुनिया में चींटियाँ, चींटें, मच्छर आदि को मारने के लिए साधन अपनाये हुए हैं। उन साधनों द्वारा एक ही साथ चींटियाँ वा मच्छर वा अनेक प्रकार के कीटाणु इकट्ठे ही विनाश हो जाते हैं ना। ऐसे आज के समय मानव भी मच्छरों, चींटियों सदृश्य अकाले मृत्यु के वश हो रहे हैं। मानव और चींटियों में अंतर ही नहीं रहा है। यह सब हिसाब-किताब और सदा के लिए समाप्त होने के कारण इकट्ठा अकाले मृत्यु का तूफान समय प्रति समय आ रहा है। वैसे धर्मराज पुरी में भी सजाओं का पार्ट अंत में नूँधा हुआ है। लेकिन वह सजायें सिर्फ आत्मा अपने आप भोगती और हिसाब-किताब चूक्तू करती है। लेकिन कर्मों के हिसाब अनेक प्रकार में भी विशेष तीन प्रकार के हैं। एक है आत्मा को अपने आप भोगने वाले हिसाब। जैसे - बिमारियाँ। अपने आप ही आत्मा तन

Example

(1)

Point to be Noted

(2)

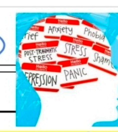

(3)

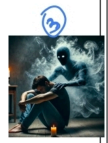

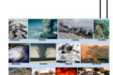

के रोग द्वारा हिसाब चूक्तू करती है। ऐसे और भी दिमाग कमजोर होना वा किसी भी प्रकार की भूत प्रवेशता। ऐसे-ऐसे प्रकार की सजाओं द्वारा आत्मा स्वयं हिसाब-किताब भोगती है। दूसरा हिसाब है - सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा दुःख की प्राप्ति। यह तो समझ सकते हो ना, कि कैसे है। और तीसरा है - प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चूक्तू होना। तीनों प्रकार के आधार से हिसाब-किताब चूक्तू हो रहे हैं। तो धर्मराजपुरी में (Type-2) सम्बन्ध और सम्पर्क द्वारा हिसाब वा (Type-3) प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चूक्तू नहीं होगा। वह यहाँ साकार सृष्टि में होगा। सारे पुराने खाते सभी के खत्म होने ही है। इसलिए यह हिसाब-किताब चूक्तू की मशीनरी अब तीव्रगति से चलनी ही है। विश्व में यह सब होना ही है। समझा। यह है कर्मों की गति का हिसाब-किताब। अब अपने आप को चेक करो - कि मुझ ब्राह्मण आत्मा का तीव्रगति के तीव्र पुरुषार्थ द्वारा सब पुराने हिसाब-किताब चूक्तू हुए है वा अभी भी कुछ बोझ रहा हुआ है? पुराना खाता भी कुछ रहा हुआ है वा समाप्त हो गया है? इसकी विशेष निशानी जानते हो? श्रेष्ठ परिवर्तन में वा श्रेष्ठ कर्म करने में कोई भी अपना स्वभाव-संस्कार विघ्न डालता है वा जितना चाहते है, जितना सोचते है उतना नहीं कर पाते है और यही बोल निकलते वा संकल्प मन में चलते कि न चाहते भी पता नहीं क्यों हो जाता है। पता नहीं क्यों हो जाता है? वा स्वयं की चाहना श्रेष्ठ होते, हिम्मत उल्लास होते भी परवश अनुभव करते है, कहते है ऐसा करना तो नहीं था, सोचा नहीं था लेकिन हो गया। इसको कहा जाता है स्वयं के पुराने स्वभाव संस्कार के परवश। यह तीनों प्रकार के परवश स्थितियाँ होती है तो न चाहते हुए होना, सोचते हुए न होना वा परवश बन सफलता को प्राप्त न करना - यह निशानी पिछले पुराने खाते के बोझ की। इन निशानियों द्वारा अपने आपको चेक करो - किसी भी प्रकार का बोझ उड़ती कला के अनुभव से नीचे तो नहीं ले आता। हिसाब चूक्तू अर्थात् हर प्राप्ति के अनुभवों में उड़ती कला। कब-कब प्राप्ति है। कब है तो अब रहा हुआ है। तो इसी विधि से अपने आपको चेक करो। दुःखमय दुनिया में तो दुःख की घटनाओं के पहाड़ फटने ही हैं। ऐसे समय पर

Point to be Noted

By hook or by crook
चाहे प्यार से.. चाहे मार से..

Most imp to understand

Attention..!

सेफ्टी का साधन है ही 'एक बाप की छत्रछाया'। छत्रछाया तो है ही ना!

(10.12.1984)